A.C.C. NO. 1597.

काव्य-मंजूषा

सम्पादक

कन्हैयालाल वर्मा एम० ए०, एम० एड०

प्रवक्ता : ईश्वरशरण प्रशिक्षण विद्यालय,

इलाहाबाद

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya ★ Bharatiya Vidya

475

प्रकाशक

ज्ञान भारती

नगिनदास बिल्डिंग,

३४१, सरदार वल्लभभाई पटेल रोड

बम्बई-४

१९७०

[मूल्य २ रुपये

…म संस्करण]

प्रकाशक
ज्ञान भारती
बम्बई–४

प्रथम संस्करण १९७०

Bharatiya Vidya Bhawan's Sri San...charya Sanskrit Mahavid
475

मूल्य २ रुपये

मुद्रक
रामबाबू अग्रवाल
ज्ञानोदय प्रेस
इलाहाबाद-२

पुरोवाक्

पूर्व विश्वविद्यालय पाठ्य-सामग्री (Pre-University Course) के अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के छात्रों की आवश्यकताओं के प्रति दृष्टि रखते हुए यह संग्रह तैयार किया गया है। इस संकलन में सम्पादक का प्रयास रहा है कि छात्रों को प्रमुख प्राचीन तथा अर्वाचीन कवियों की कविताओं से परिचय प्राप्त हो सके। रचनाओं से पूर्व कवियों का संक्षेप परिचय, उनकी काव्यगत विशेषताएँ तथा भाषा-शैली का दिग्दर्शन कराया गया है। 'परिशिष्ट' में उनकी सुविधा के लिए शब्दार्थ तथा अभ्यास के लिए रचना-सम्बन्धी ऐसे प्रश्न पूछे गये हैं जिनसे उन्हें पाठ की पुनरावृत्ति का अवसर मिल जाय तथा परीक्षा के लिए उन्हें साधारण ज्ञान प्राप्त हो सके।

पुस्तक के प्रकाशन में श्री मोतीलाल जी अग्रवाल ने जिस तत्परता और सुरुचि का परिचय दिया है, वह सदैव वन्दनीय रहेगा।

अन्त में मैं उन समस्त कवियों के प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनकी कविताओं को इस संकलन में दिया गया है।

यदि यह संकलन अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कुछ भी दे सका तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

कन्हैयालाल वर्मा

बसंत पंचमी
संवत् २०२६

अनुक्रम

प्राचीन काव्य

	पृष्ठ
१—कबीरदास	१
कबीर के दोहे	३
२—सूरदास	५
सूरदास के पद	७
३—गोस्वामी तुलसीदास	८
तुलसी-वचनामृत	१०
४—बिहारीलाल	११
बिहारी के दोहे	१३
५—भूषण	१४
शिवा-शौर्य	१६
६—रसखान	१७
कृष्ण-महिमा	१९

आधुनिक काव्य

७—मैथिलीशरण गुप्त	२०
कंस का स्वाभिमान	२२
८—सुमित्रानंदन पंत	२४
सोनजुही	२६
९—महादेवी वर्मा	२९
जो तुम आ जाते एक बार	३१

	पृष्ठ
१०—रामधारीसिंह 'दिनकर'	३२
अभिनव मनुष्य	३४
११—सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन 'अज्ञेय'	३६
उष:काल की भव्य शान्ति	३८
१२—हरिवंशराय 'बच्चन'	४०
निर्माण	४२
१३—गोपालदास 'नीरज'	४५
साँसों के मुसाफिर	४७
१४—भवानीप्रसाद मिश्र	४९
गीत-फ़रोश	५०
१५—नरेन्द्र शर्मा	५३
हिन्दू-मुसलमान	५४
१६—गोपालप्रसाद व्यास	५७
सुकुमार गधे	५९
१७—शिवमंगल सिंह 'सुमन'	६२
हमें न बाँधो प्राचीरों में	६४
१८—भारत भूषण अग्रवाल	६६
ब्रह्मपुत्र का कूल न देंगे	६७
परिशिष्ट	१–११
कठिन शब्दों के अर्थ	३
अभ्यास के लिए प्रश्न	६

१ | कबीरदास

जीवन-परिचय

कबीरदास का जन्म संवत् १४५६ वि० में काशी में हुआ था। किवदन्ती है कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था जिसने लोक-लाज के भय से इन्हें काशी के लहरतारा तालाब के पास फेंक दिया था। पश्चात् नीरू और नीमा नामक जुलाहे दम्पति ने इनका पालन-पोषण किया। कहा जाता है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई था और कमाल नामक एक पुत्र भी था।

कबीर के गुरु प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य स्वामी रामानन्द जी थे। यद्यपि कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी भ्रमण और सत्संग के द्वारा उन्होंने विभिन्न धर्मों के मर्म को ग्रहण किया था। ये हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के आडम्बरों और बुराइयों की कड़ी आलोचना किया करते थे और निर्मल हृदय से भगवान् की उपासना का उपदेश दिया करते थे। कबीर मूलतः भक्त थे, फिर समाज-सुधारक।

कबीर की मृत्यु मगहर में विक्रम संवत् १५७५ के लगभग हुई। इनका अन्तिम संस्कार हिन्दू और मुसलमान दोनों ने अपने-अपने ढंग से किया।

रचनाएँ

कबीर के नाम से कई ग्रन्थ मिलते हैं जिनमें बीजक प्रसिद्ध है। कबीर की रचनाएँ तीन रूपों में मिलती हैं—(१) साखियाँ जो प्रायः दोहों में हैं, (२) सबद जो पदों के रूप में हैं तथा (३) रमैनी जो दोहे-चौपाइयों के रूप में हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

कबीर निर्गुण राम के उपासक थे। अतः उनकी रचनाओं में भक्ति का श्रेष्ठ और उत्कृष्ट रूप उपलब्ध होता है। उनकी रचनाओं में हिन्दू-मुसलमानों के धार्मिक आडम्बर एवं रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, निर्गुण राम के प्रति गहरी भक्ति, विशुद्ध अनुभूति, नीति एवं दार्शनिक विवेचन मिलता है। यद्यपि कबीर की रचनाओं में रस, अलंकार तथा कवित्व की कमी है, किन्तु भावों की गहराई अत्यधिक है।

भाषा-शैली

कबीर की भाषा अवधी, ब्रज, खड़ीबोली, राजस्थानी, भोजपुरी, पंजाबी, फारसी आदि भाषाओं का मिश्रण है, पर पूर्वी बोली का अधिक प्रभाव है। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषा को 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा है। इनकी रचनाएँ दोहों, पदों और चौपाइयों में हैं।

कबीरदास निर्गुणधारा के प्रथम और श्रेष्ठ कवि हैं।

कबीर के दोहे

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि मांहि पडंत ।
कहै कबीर गुरु ग्यान तै, एक आध उबरंत ।।

गुरु गोविंद दोऊँ खड़े, काके लागूँ पायँ ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय ।।

पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजौं पहार ।
तातें या चाकी भली, पीस खाय संसार ।।

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि ।
मनुवां तो चहुँ दिस फिरै, यह तो सुमिरन नाँहि ।।

ज्यों तिल माँही तेल है, ज्यों चकमक में आगि ।
तेरा साईं तुज्झ में, जागि सके तो जागि ।।

जाके मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप ।
पुहुप बास तें पातरा, ऐसा तत्त्व अनूप ।।

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय ।।

जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध ।
अंध अंधा ठेलिया, दून्यू कूप पड़ंत ।।

पार ब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान ।
कहिवे कूँ सोभा नहीं, देख्या ही परवान ।।

जब गुन कौ गाहक मिलै, तब गुन लाख बिकाइ ।
जब गुन कौ गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाइ ।।

———

२ | सूरदास

जीवन-परिचय

कतिपय विद्वानों के अनुसार सूरदास का जन्म-संवत् १५४० और मृत्यु-सं० १६२० माना गया है। पिता का नाम रामदास था। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। आगरा-मथुरा के मध्य गऊघाट पर ही ये रहा करते थे इसलिए लोग उसे ही इनका जन्म-स्थान मानते हैं।

गोपियों के विरह तथा बाल-मनोभावों का जैसा सजीव एवं वैज्ञानिक चित्रण सूर ने किया है, वैसा शायद कोई भी नहीं कर सका है। आपके व्यक्तित्व में अन्तर्निहित दीनता, गर्व, दास्य, सरसता आदि का सुन्दर संतुलन आपके पदों में मिलता है, जो अन्यत्र अप्राप्य है। आप अष्टछाप के प्रमुख कवि थे। सूर ने जीवन के एक पक्ष (कोमल) का दिग्दर्शन कराया है, उस क्षेत्र में आप अतुलनीय हैं तथा भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के साहित्य में अग्रगण्य हैं।

रचनाएँ

'सूरसारावली', 'सूरसागर', 'साहित्य-लहरी' ('व्याहलो', 'नलदमयन्ती', 'हरिवंश टीका' अप्राप्य)।

काव्यगत विशेषताएँ

बाल-क्रीड़ा का मनोविश्लेषण, भावनाओं, कल्पनाओं का ललित चित्रण, गोपिकाओं का विरह-वर्णन आपके पदों में विशेषरूप से मिलता है। दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, शृंगार का वियोग-पक्ष सभी प्रचुरता के साथ उनमें मिलते हैं। आपके पद भावुकता एवं व्यंजना से पूर्ण हैं।

भाषा-शैली

सूरदास ने अपनी रचनाएँ ब्रजभाषा में लिखी हैं। कोमलकांत पदावली में माधुर्य का स्रोत प्रवाहित किया है। आपकी काव्यभाषा ललित, शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। फारसी, पंजावी एवं संस्कृत के तत्सम शव्दों को भी आपने लिया है। शान्त, शृङ्गार, वात्सल्य रस आपके पदों में विशेष रूप से मिलते हैं।

सूरदास के पद

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो ।
मोसों कहत मोल कौ लीनो तोहि जसुमति कब जायो ॥
कहा कहौं यहि रिस के मारे खेलन हौं नहि जातु ।
पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तुमरो तातु ॥
गोरे नंद जसोदा गोरी तुम कत स्याम सरीर ।
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत बलबीर ॥
तू मोही को मारन सीखी दाउहि कबहुँ न खीझै ।
मोहन को मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझै ॥
सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई जनमत ही कौ धूत ।
'सूर' श्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत ॥

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ ॥
अलि-सुत प्रीति करी जल-सुत सौं, संपुट माँझ गह्यौ ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ ॥
हम जौ प्रीति करी माधव सौं, चलत न कछू कह्यौ ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ ॥

———

३ | गोस्वामी तुलसीदास

जीवन-परिचय

तुलसीदास का जन्म सं० १५८९ में राजापुर में बाँदा जनपद के अन्तर्गत हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम, माता का नाम हुलसी और पत्नी का नाम रत्नावली था। आप सरयूपारीण ब्राह्मण थे। मृत्यु श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् १६८० में हुई। आप संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। वेद, शास्त्र, पुराण—सभी में आपकी पूर्ण गति थी।

रचनाएँ

'कवित्त-रामायण', 'गीतावली रामायण', 'कवितावली रामायण', 'छप्पय रामायण', 'दोहावली', 'बरवै रामायण', 'रघुवर शलाका', 'रामचरित-मानस' (महाकाव्य), 'जानकी मंगल', 'रामलला नहछू', 'पार्वती-मंगल', 'विनय-पत्रिका'।

काव्यगत विशेषताएँ

तुलसीदास के इष्ट देव दशरथ सुत राम थे। इन्होंने अपने राम को अवतार के रूप में चित्रित किया है। असुरों का दमन करने के लिए ही उन्होंने मानव शरीर धारण किया है। ऐसे राम के प्रति तुलसी की भक्ति सेवक सेव्य भाव की है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने इष्टदेव राम को सर्वत्र प्रभु और स्वामी के रूप में चित्रित किया है।

तुलसीदास जी हिन्दी के भक्त कवि हैं। भगवान् राम का जीवन उनके काव्य का विषय है। इनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने राम के जीवन की सुन्दर झाँकियाँ सरल तथा निश्छल हृदय से उतारी हैं।

गोस्वामी जी भावलोक के भी शासक हैं। थोड़े शब्दों में अनेक भाव भर देना उनकी विशेषता है।

भाषा-शैली

आपकी भाषा संस्कृत-गर्भित अवधी है लेकिन यत्र-तत्र प्रचलित अरबी-फारसी के शब्दों को भी आपने अपनाया है। अपनी रचनाओं में घनाक्षरी, दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया, छप्पय, झूलना आदि छन्दों की शैली तथा 'विनय-पत्रिका' में गीति-शैली आपने अपनायी है। ब्रजभाषा में भी कविताएँ आपने लिखी हैं। 'विनय-पत्रिका' में ब्रजभाषा का परिष्कृत रूप है।

वर दंत की पंगति कुन्दकली, अधराधर पल्लव खोलन की।
चपला चमकै घन-बीच जगै, छवि मोतिन माल अमोलन की॥
घुंघरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलन की।
निवछावरि प्रान करै तुलसी, वलि जाउँ लला इन बोलन की॥

—(कवितावली)

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसों?
मो समान आरत नहिं आरतिहर तोसों॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब विधि हितु मेरो॥
तोंहि मोंहि नाते अनेक मानिये जौ भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै॥

—(विनय-पत्रिका

४ बिहारीलाल

ीवन-परिचय

कविवर बिहारीलाल का जन्म ग्वालियर के निकट बसुआ गोविन्दपुर ामक ग्राम में संवत् १६६० वि० में हुआ था। इनका बाल्यकाल बुन्देलखण्ड व्यतीत हुआ। युवावस्था में ये अपनी ससुराल मथुरा में आ बसे। बिहारी जयपुर के मिर्जा राजा जयसाह (जयसिंह) के दरबारी कवि और उन्हीं के कहने से इन्होंने सात सौ दोहों की रचना की थी जिनका ग्रह 'बिहारी सतसई' के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इनके काव्य-ौशल पर मुग्ध होकर महाराजा जयसिह ने इन्हें प्रत्येक दोहे के लिए एक-एक शर्फी दी थी।

विक्रम संवत् १७२० में इनकी मृत्यु हो गयी।

चनाएँ

बिहारी अपनी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' के कारण हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। शृंगार रस के ग्रन्थों में इसका स्थान अद्वि-तीय है। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का प्रमाण इस पर रचित, उन टीकाओं मिलता है जो अनेक रूप में गद्य, पद्य, दोहा, कुंडलिया, कवित्त, सवैया आदि में लिखी गयी हैं। संस्कृत तथा उर्दू तक में इस ग्रन्थ की टीकाएँ उपलब्ध हैं। मात्र इस एक ग्रन्थ की सरसता, रमणीयता और महत्ता के कारण बिहारी अमर कवि हो गये हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

'बिहारी सतसई' मुख्यतः शृंगारपरक ग्रन्थ है, किन्तु भक्ति और नीति के भी कुछ दोहे इसमें मिलते हैं। 'सतसई' मुक्तक काव्य है। इसके छोटे-छोटे

दोहों में भाव जैसे कूट-कूटकर भरे हैं। भावाभिव्यंजना की कुशलता के स साथ उक्तिकौशल और अलंकारों का चमत्कार भी दिखाई पड़ता है। के संयोग और वियोग का मर्मस्पर्शी चित्र इनकी रचनाओं में मिलता

भाषा-शैली

'सतसई' दोहों में लिखा मुक्तक काव्य है। इसकी भाषा यद्यपि चल ब्रजभाषा है, तथापि वह पूर्ण साहित्यिक एवं परिमार्जित भी है। बिहारी वुन्देलखण्डी और फारसी शब्दों का भी सफल प्रयोग किया है।

बिहारी के दोहे

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परे, श्याम हरित दुति होय ।।
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यह बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल ।।
सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात ।
मनों नीलमनि-सैल पर, आतप परचो प्रभात ।।
जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार ।
अब अलि ! रही गुलाब में, अपत कटीली डार ।।
इहि आसा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल ।
ऐहैं बहुरि बसंत रितु, इन डारनि वै फूल ।।
कर लै चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेंटि ।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति धरति समेटि ।।
चमचमात चंचल नयन, विच घूँघट-पट झीन ।
मानहुँ सुर सरिता विमल, जल उछरत जुगमीन ।।
भूषन भार सँभारि है, क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधे पाँय न परत मग, सोभा ही के भार ।।
अंग अंग नग जगमगति, दीप-शिखा सी देह ।
दिया बढ़ाये हू रहैं, बड़ो उजेरो गेह ।।
सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर ।
देखत में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर ।।

दोहों में भाव जैसे कूट-कूटकर भरे हैं। भावाभिव्यंजना की कुशलता के स
साथ उक्तिकौशल और अलंकारों का चमत्कार भी दिखाई पड़ता है। प्रे
के संयोग और वियोग का मर्मस्पर्शी चित्र इनकी रचनाओं में मिलता

भाषा-शैली

'सतसई' दोहों में लिखा मुक्तक काव्य है। इसकी भाषा यद्यपि चल
ब्रजभाषा है, तथापि वह पूर्ण साहित्यिक एवं परिमार्जित भी है। बिहारी
बुन्देलखण्डी और फारसी शब्दों का भी सफल प्रयोग किया है।

बिहारी के दोहे

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परे, श्याम हरित दुति होय ।।
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल ।
यह बानिक मो मन वसौ, सदा बिहारीलाल ।।
सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात ।
मनों नीलमनि-सैल पर, आतप परचो प्रभात ।।
जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार ।
अब अलि ! रही गुलाब में, अपत कटीली डार ।।
इहि आसा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल ।
ऐहैं बहुरि बसंत रितु, इन डारनि वै फूल ।।
कर लै चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेंटि ।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति धरति समेटि ।।
चमचमात चंचल नयन, विच घूँघट-पट झीन ।
मानहुँ सुर सरिता विमल, जल उछरत जुगमीन ।।
भूषन भार सँभारि है, क्यों यह तन सुकुमार ।
सूधे पाँय न परत मग, सोभा ही के भार ।।
अंग अंग नग जगमगति, दीप-शिखा सी देह ।
दिया वढ़ाये हू रहैं, वड़ो उजेरो गेह ।।
सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर ।
देखत में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर ।।

---

५ | भूषण

जीवन-परिचय

भूषण का जन्म सं० १६७० में कानपुर जिले के अन्तर्गत तिकवांपा ग्राम में हुआ। मतिराम, चिन्तामणि के आप भाई और शिवाजी के दरबारी कवि थे। इनकी रचनाओं से ज्ञात होता है कि रस, अलंकार आदि का अच्छा ज्ञान था।

भूषण राष्ट्रीय कवि के रूप में सर्वश्रेष्ठ हैं। उस समय जब श्रृंगार-प्रधान कविताएँ ही हुआ करती थीं, भूषण ने वीर रस-प्रधान कविताओं को लिखकर एक विद्रोह किया है। ये उस युग के एकमात्र राष्ट्रीय कवि हैं, इस दृष्टि से इनका स्थान हिन्दी-काव्य के क्षेत्र में अमर है।

भूषण की मृत्यु सं० १७७२ में हुई।

रचनाएँ

'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी', 'छात्रसाल दशक', 'भूषण उल्लास' तथा 'भूषण हजारा'।

काव्यगत विशेषताएँ

भूषण-कृत 'शिवराज भूषण' अलंकार ग्रंथ है। इसमें राष्ट्रीय कविताएँ लिखी गई हैं। आपकी कविताओं में शिवाजी की कीर्ति, वीरता, पुरुषार्थ का सुन्दर परिचय दिया गया है, जिसके कारण वीर रस-प्रधान ही कविताएँ हुईं। अलंकारिक युग होने के कारण भूषण ने भी सम्पूर्ण अलंकारों का प्रयोग किया लेकिन वह श्रृंगारिक न होकर वीर रस में परिवर्तित और परिचयात्मक

गया है । हिन्दू समाज की हीन अवस्था, मुगलों का अत्याचार, शिवाजी का शौर्य आदि ही भूषण की कविता के आधार बने हैं।

भाषा-शैली

भाषा मुख्य रूप से ब्रज है, लेकिन फारसी-अरवी, वुन्देलखण्डी, प्राकृत आदि शब्दों का भी प्रयोग प्रचुर मात्रा में इन्होंने किया है। भाषा वीर रस-विधान है, जिसमें ओजगुण सहज ही आ गया है। इन्होंने कविता, सवैया, दोहा आदि छंदों का प्रयोग किया है।

शिवा-शौर्य ।

सव्रन क ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग,
ताहि खड़ो कियो छ-हजारिन के नियरे ।
जानि गैरमिसिल, गुसीला गुस्सा धारि उर,
कीन्हों न सलाम न बचन बोले सियरे ।।
'भूषन' भनत महाबीर बलकन लाग्यो,
सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे ।
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भये,
स्याह-मुख नौरँग, सिपाह-मुख पियरे ।।

इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुलराज हैं ।
पौन वारिवाह पर, सम्भु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज हैं ।।
दावा द्रुमदण्ड पर, चीता मृग-झुण्ड पर,
भूषन वितुण्ड पर, जैसे मृगराज हैं ।
तेज तम-अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं ।।

---

६ | रसखान

जीवन-परिचय

कविवर रसखान का जन्म सं० १६१५ में हुआ था। इनका पूरा नाम सैय्यद इब्राहीम रसखान है। इनके माता-पिता के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। इनका सम्बन्ध दिल्ली के शाही खानदान से था। युवावस्था में कुछ वैष्णवों के उपदेश से उनका लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम में बदल गया और अन्त में कृष्ण के प्रति आकृष्ट हुआ। मुसलमान कवियों में आपका नाम आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने कृष्ण के जीवन की अनेक घटनाओं को लेकर सुन्दर छन्द रचे हैं।

सं० १६९० में इनकी मृत्यु हो गयी।

रचनाएँ

'प्रेम वाटिका' एवं 'सुजान रसखान' दो रचनाएँ अब तक प्राप्त हो सकी हैं। प्रेम वाटिका में केवल ५२ दोहे हैं। इसमें शुद्ध प्रेम का वर्णन है। 'सुजान रसखान' में १२० छंद हैं जिनमें से अधिकतर कवित्त और सवैये हैं। इन्हीं रचनाओं ने रसखान को अमर कर दिया है।

काव्यगत विशेषताएँ

मुसलमान होते हुए भी कृष्ण-भक्ति में आपका नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। संसार की समस्त वस्तुओं को रसखान ने कृष्णभक्ति पर न्योछावर कर दिया। कवि के हृदय से कृष्ण प्रेमरस की धार कवित्त और सवैयों द्वारा बह निकली। इनके अनेक सवैयों से पता चलता है कि कवि का कृष्ण-प्रेम अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। रसखान अपने आराध्य देव से यही

चाहते हैं कि उनके चरणों में कवि का प्रेम सदैव बना रहे। कवि के पास जो कुछ है, उसे वह भगवान् कृष्ण के चरणों में अर्पित करके ही सुख का अनुभव करता है।

भाषा-शैली

रसखान की भाषा बड़ी मधुर और स्वाभाविक है। रचनाओं में भा और भाषा का सुन्दर सामंजस्य है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। इन्होंने अपनी कविता ब्रजभाषा में की तथा सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है यत्र-तत्र मुहावरों का भी प्रयोग दिखाई पड़ता है। कहीं-कहीं पर उर्दू, फारसी के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है।

रसखान का सम्पूर्ण काव्य मुक्तक है और उसमें शृंगार रस प्रधान है छंदों में दोहा, सोरठा, कवित्त और सवैयों का प्रयोग हुआ है। इनकी उक्ति सरल और सरस हैं जो कि बहुत कम कवियों में पायी जाती हैं।

कृष्ण-महिमा

मानुष हौं तौ वहै रसखान, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पशु हौं तौ कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मझारन ।।
पाहन हौं तौ वहै गिरिकौ, जो कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन ।।

सेस गनस महेस दिनस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं ।।
नारद से सुक व्यास रटैं, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

---

७ | मैथिलीशरण गुप्त

जीवन-परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म संवत् १९४३ में चिरगांव (झांसी) में था। इन्होंने अपने पिता से रामभक्ति और कवित्व दोनों ही पाया, चलकर दोनों का विकास हुआ। गुप्तजी हिन्दी के प्रथम कवि थे जि रचना में खड़ीबोली का व्याकरण-सम्मत शुद्ध और परिमार्जित रूप दि देता है। राष्ट्रीय भावनाओं का जैसा प्रतिनिधित्व इन्होंने किया आजकल का कोई भी कवि नहीं कर सका। इसी कारण इनको राष्ट्रकवि जाता था। देश-भक्ति, आत्मसुधार, स्वावलम्बन, विश्वप्रेम, उच्चादर्श, भिमान आदि अनेक भावनाओं का समावेश इनकी रचनाओं में मिलता

विक्रम संवत् २०२१ में इनकी मृत्यु हो गयी।

रचनाएँ

गुप्तजी द्वारा लिखित मौलिक और अनुवादित ग्रन्थों की संख्या ४ लगभग है। इनमें भारतभारती, जयद्रथवध, साकेत, यशोधरा, द्वापर वटी, अनघ, नहुष, सिद्धराज प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। गुप्तजी की काव्य-प्र का पूर्ण प्रकाश साकेत और यशोधरा में देखने को मिलता है। साकेत बोली के महाकाव्यों में विशिष्ट स्थान रखता है और इस पर हिन्दी-साहि सम्मेलन की ओर से मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी मिल चुका है। यह राम धारा का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है।

काव्यगत विशेषताएँ

गुप्तजी ने मुक्तक, खण्डकाव्य, महाकाव्य आदि सभी प्रकार की र की हैं और सभी में इनको अद्वितीय सफलता मिली है। इनकी क

नकी प्राणवती साधना की ज्वलन्त उदाहरण हैं। जीवन और भारतीय स्कृति की लोकपावनी धाराओं का कल्याणकारी संगम गुप्त ी की रचनाओं उपलब्ध होता है। कवि ने सदैव नैतिक मूल्यों पर आग्रह किया । नारी का मातृत्व भरा त्यागमय रूप गुप्तजी ने आत्मा के मधुरतम स्वरों अभिव्यक्त किया है। गुप्तजी का काव्य भारतीय संस्कृति एवं जीवन का जीव प्रतिबिम्ब है।

ाषा-शैली

गुप्तजी की भाषा शुद्ध परिमार्जित, सरल और प्रवाहमय खड़ीबोली है। नके काव्य में प्रबंध-कल्पना और गीततत्त्व दोनों का संयोग है। छंदों की विविधता और अलंकार-योजना की मौलिकता प्रशंसनीय है। गुप्तजी खड़ी-ोली के मौलिक और श्रेष्ठ कवि थे।

कंस का स्वाभिमान

नियति कौन है ? एक नियन्ता
मैं ही अपना आप;
कर्म - भीरुओं का आकुंचन,
एक मात्र यह पाप ।
धर्म एक, बस अग्नि-धर्म है,
जो आवे सो छार !
जल भी उड़े वाष्प बन बन कर
मल भी हो अंगार !

फूँक - फूँक कर पैर धरोगे
धरती पर तुम मूढ़ ?
तो फिर हटो, भाड़ में जाओ,
पाओ निज गति गूढ़ ।
मैं निश्चिन्त बढ़ूँगा आगे,
पहने पादत्राण;
बचें कीट - कंटक, यदि उनको
प्रिय हैं अपने प्राण ।

बनता नहीं ईंट - गारे से
वह साम्राज्य विशाल ;
सुनो, चुने जाते हैं उसमें
रुधिराप्लुत कंकाल !

लिखो भले उसकी भीतों पर
दया - धर्म के चित्र;
सदा भुलाते रहें जनों को
जिनके चटुल चरित्र ।

देख कहीं दो बूँद नेत्र - जल
तुम गल गये तुरन्त;
जान लिया तो बस मिट्टी के
पुतले ही तुम सन्त !
ठौर अंक में पा सकती है
कोई मृदुता - मूर्ति;
किन्तु हृदय में एक कठिनता
कमठता की पूर्ति !

जितने भी बन्धन हैं, वे सब
अबलों के ही अर्थ;
बन्धन बन्धन ही है, तोड़ो,
यदि तुम सबल समर्थ ।
ठहर, ब्रह्मवादी, बकता है,
तू क्या अब्रह्मण्य ?
तेरा ब्रह्म और तू दोनों
मेरे निकट नगण्य ।

(द्वापर)

———

८ | सुमित्रानन्दन पन्त

जीवन-परिचय

श्री सुमित्रानंदन पंत का जन्म अल्मोड़ा जिले के कोसानी नामक ग्राम में संवत् १९५८ में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव पर ही हुई। काशी के जयनारायण हाईस्कूल से स्कूल लीविंग परीक्षा पास करने के पश्चात् आप प्रयाग आये और म्योर सेंट्रल कालेज में पढ़ने लगे। यहाँ आपकी विकासोन्मुख प्रतिभा को आश्रय मिला और आपने अंग्रेजी तथा संस्कृत का गम्भीर अध्ययन किया। इण्टर की परीक्षा पास करने के पूर्व ही असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर आपने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्र रूप से अध्ययन और लेखन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। आपके लेखन और पठन-पाठन का यह क्रम अब भी बना हुआ है।

आजकल भी आप प्रयाग में ही रहते हैं। आपकी हिन्दी सेवाओं से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि तथा पाँच हजार रुपये का एकादमी पुरस्कार भी दिया है। आपको सं० २०२६ वि० में चिदम्बरा नामक रचना पर एक लाख रुपये का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

रचनाएँ

पन्त जी छायावाद के कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। अब तक इनके उच्छ्वास, पल्लव, वीणा, ग्रन्थि, गुंजन, युगवाणी, स्वर्णधूलि, स्वर्ण किरण कला और बूढ़ा चाँद, चिदम्बरा आदि अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ज्योत्सना, रजतशिखर तथा शिल्पी पन्त जी के गीति-नाट्य हैं। इधर पन्त जी ने 'लोकायतन' नामक एक विशाल महाकाव्य भी लिखा है। पन्त जी के निबन्धों और कहानियों के संग्रह भी छप चुके हैं।

ाव्यगत विशषताएँ

पन्त जी की कविताओं में प्रकृति-चित्रण, कल्पना का विराट रूप, संघर्षमय ीवन की वास्तविकता, समाज-शोषण के प्रति विद्रोह आदि का चित्रण विशेष प से मिलता है। इसी कारण पन्त जी छायावादी, प्रगतिवादी दोनों कहे ाते हैं। ये शिवं और सुन्दरम् के कवि हैं। मार्क्स, गाँवी, अरविन्द, रवीन्द्र, पनिषद् आदि के विचार-दर्शनों का सामंजस्य पन्त जी की कविताओं में मलता है। नारी के प्रति सहानुभूति, रहस्य-मावना, दार्शनिकता आपके ाव्य की विशेषताएँ हैं।

ाषा-शैली

आपकी भाषा संस्कृतगर्भित होने पर कोमल-कान्त पदावली के कारण ंगीतमयी है। शव्द-चयन, ध्वनि आदि अंग्रेजी तथा वंगला से प्रभावित है। ाव-व्यंजना की शैली और उक्तियाँ हिन्दी कविता को पन्त जी की अपनी ेन है। भाषा शुद्ध और परिमार्जित है।

कोमलता के भार से मरी,
अंग - भंगिमा - भरी, छरहरी।
उद्भिद जग की-सी निर्झरिणी
हरित नीर, बहती-सी टहनी !
सोनजुही की बेल,
चौकड़ी भरती चंचल हिरनी !

(चिदम्बरा)

-----

१ | महादेवी वर्मा

जीवन-परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म संवत् १९६४ में एक सम्पन्न तथा कुलीन कायस्थ-परिवार में जिला फर्रुखाबाद में हुआ था। आपके पिता बाबू गोविंद-प्रसाद वर्मा विद्वान् और दार्शनिक व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व और संस्कृति की छाप महादेवी पर भी पड़ी। इनकी माता का नाम श्रीमती हेमरानी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में हुई। ११ वर्ष की आयु में आपका विवाह श्री स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ। विवाह के बाद भी अध्ययन का कार्य चलता रहा। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। प्रयाग महिला विद्यापीठ में अनेक वर्षों से प्रधानाचार्या हैं। आपने कई वर्षों तक 'चाँद' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन भी किया था। आपको 'नीरजा' काव्य-संग्रह पर ५०० रु० का सेक्सरिया पुरस्कार तथा 'यामा' पर १२०० रु० का मंगलाप्रसाद पारितोषिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से प्राप्त हुआ।

रचनाएँ

नीहार, नीरजा, रश्मि, सान्ध्यगीत और दीप शिखा आदि इनके कविता-संग्रह हैं। अतीत के चल-चित्र, स्मृति की रेखाएँ तथा शृंखला की कड़ियाँ इनके निबन्ध-संग्रह हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

हिन्दी की कवयित्रियों में महादेवी का बहुत ऊँचा स्थान है। मीरा के बाद हिन्दी-साहित्य में विरह का वर्णन महादेवी-जैसा अन्य किसी ने नहीं किया। आपकी विरह-सम्बन्धी अनुभूति अनोखी है। उसमें मार्मिकता है।

हृदय तक पहुँचने की क्षमता है। रचनाएँ रहस्यवादी भावना से ओतप्रोत हैं आपके काव्य में विश्वव्यापी करुणा, निराकार प्रियतम के चिर-वियोग औ उसकी चिर व्यथा के दर्शन होते हैं। आपका प्रियतम कबीर का प्रियतम है आपको अपने प्रियतम के दर्शन सब जगह होते हैं।

भाषा-शैली

महादेवी जी की भाषा खड़ीबोली है। उसमें सरलता और सरसता है। व कोमल है। नारी हृदय होने के कारण और भी सरस हो गई है। आपने गी शैली का प्रयोग किया है। काव्य का अधिकांश भाग करुण रस से ओतप्रो है। आपके काव्य में सच्चा रहस्यवाद झलकता है।

जो तुम आ जाते एक बार

Sanskrit Mahavidyalaya
475

जो तुम आ जाते एक बार

कितनी करुणा कितने सँदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,

गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग,
आँसू लेते वे पद पखार

हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता ओठों से विषाद,

छा जाता जीवन में वसन्त
लुट जाता चिर संचित विराग,
आँखें देतीं सर्वस्व वार

———

१० | रामधारीसिंह 'दिनकर'

जीवन-परिचय

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म मुँगेर जिले के सिमरिया
ग्राम में संवत् १९६५ में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव पर ही
पटना विश्वविद्यालय से बी० ए० (आनर्स) की उपाधि लेने के प
आप विभिन्न सरकारी पदों पर कार्य करते रहे। सब-रजिस्ट्रार,
संचालक, प्रोफेसर आदि अनेक पदों पर आपने काम किया है। कुछ
तक आप भागलपुर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति थे। इस समय
भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य हैं।

रचनाएँ

काव्य-रचना के प्रति दिनकर जी की रुचि बचपन से ही रही
अब तक इनके 'बारदोली विजय', 'रेणुका', 'हुङ्कार', 'रसवन्ती', 'द्वन्द्व
'सामधेनी', 'दिल्ली' आदि काव्य-संग्रह तथा 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी'
'उर्वशी' प्रबन्ध-काव्य प्रकाशित हो चुके हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय' अ
महत्त्वपूर्ण इतिहास पुस्तक है। 'उजली आ ', 'अर्धनारीश्वर', 'मिट्टी की
तथा 'रेती के फूल' निबंधों के संग्रह हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

छायावादी युग के बाद दिनकर जी ने हिन्दी-काव्य को स्वाभाविक
प्रदान की है। इनके पूर्ववर्ती कवि केवल कल्पनालोक में उड़ा करते हैं। दि
जी के काव्य में देश-प्रेम, जागरण-संदेश, प्राचीन गौरव की स्मृति, साम
शोषण के प्रति विद्रोह, दलित समाज का चित्रण आदि दिखाई पड़ता
इनकी कविताओं में जीवन की कठोरता और हृदय की कोमलता दोनों

मिलते हैं । दिनकर जी के काव्य पर गाँधीवाद और गीता का प्रभाव है ।

भाषा-शैली

दिनकर जी की भाषा परिमार्जित, ओजपूर्ण, प्रवाहयुक्त एवं प्रभावोत्पादक है । यत्र-तत्र उर्दू शब्दों का भी प्रयोग मिलता है, किन्तु वे प्रयोग अस्वाभाविक नहीं हैं । भाषा कहीं-कहीं संस्कृत-गर्भित है, किन्तु दुरूह नहीं है । शैली प्रभावशाली, व्यंजक एवं प्रवाहयुक्त है ।

अभिनव मनुष्य

यह मनुज,
जिसका गगन में जा रहा है यान,
काँपते जिसके करों को देख कर परमाणु।
खोल कर अपना हृदय गिरि, सिन्धु, भू, आकाश,
हैं सुना जिसको चुके निज गुह्यतम इतिहास।
खुल गये परदे, रहा अब क्या यहाँ अज्ञेय?
किन्तु नर को चाहिए नित विघ्न कुछ दुर्जेय;
सोचने को और करने को नया संघर्ष,
नव्य जय का क्षेत्र, पाने को नया उत्कर्ष।

घुट रही नर-बुद्धि की है साँस;
चाहती वह कुछ बड़ा जग, कुछ बड़ा आकाश।
यह मनुज, जिसके लिए लघु हो रहा भूगोल,
अपर ग्रह-जय की तृषा जिसमें उठी है बोल।
यह मनुज विज्ञान में निष्णात,
जो करेगा, स्यात्, मङ्गल और विधु से बात।

यह मनुज, जो ज्ञान का आगार!
यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार!
नाम सुन भूलो नहीं, सोचो-विचारो कृत्य,
यह मनुज, संहार-सेवी, वासना का भृत्य।

छद्म इसकी कल्पना, पाषण्ड इसका ज्ञान,
यह मनुष्य, मनुष्यता का घोरतम अपमान।

श्रेय होगा, सुष्ठु - विकसित मनुज का वह काल,
जब नहीं होगी धरा नर के रुधिर से लाल।
श्रेय होगा धर्म का आलोक वह निर्बन्ध,
मनुज जोड़ेगा मनुज से जब उचित सम्बन्ध।

---

११ अज्ञेय

जीवन-परिचय

श्री 'अज्ञेय' का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सायन है। इन जन्म ७ मार्च संवत् १९६८ को कसिया (देवरिया) के पुरातत्त्व अनुसंधा शिविर में हुआ था। इनके पिता डा० हीरानन्द शास्त्री संस्कृत के विद्व तथा भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग के उच्च अधिकारी थे। 'अज्ञे जी की शिक्षा लखनऊ, श्रीनगर, मद्रास और लाहौर आदि स्थान में हुई आपने लाहौर से प्रथम श्रेणी में बी० एस-सी० परीक्षा उत्तीर्ण की और एम ए० अंग्रेजी साहित्य में प्रवेश ले लिया। क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आने कारण दो बार जेल जाना पड़ा। संवत् १९९७ में सुश्री सन्तोष से विव किया और कुछ ही दिनों के बाद सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इन्होंने दूस विवाह सं० २०१३ में कपिला मलिक से किया। 'अज्ञेय' जी 'सैनिक' अ 'विशाल भारत' के सम्पादकीय विभाग में रहे और संवत् २००४ में 'प्रती नामक पत्र निकाला।

संवत् २००० में सेना में भरती होकर कोहिमा फ्रण्ट पर गये। सं० २० में वहाँ से मुक्त हो गये। सं० २००७ से २०१२ वि० तक 'आकाशवाणी' समाचार विभाग से सम्बद्ध रहे। सं० २०१८ में अमेरिका चले गये अ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति के प्राध्यापक नियुक्त गये। सं० २०२२ में साहित्य अकादमी ने इनकी काव्यकृति 'आँगन पार द्वार' पर ५००० रु० का पुरस्कार प्रदान किया। सं० २०२२ में इनका नाम नोबुल-पुरस्कार के लिए भी प्रस्तावित हुआ था। सम्प्रति अ दिल्ली में रहकर 'दिनमान' का सम्पादन तथा स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

रचनाएँ

काव्य : भग्नदूत, चिंता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, अरी ओ करुणा प्रभामय, आँगन के पार द्वार, पूर्ण, सुनहले शैवाल ।

उपन्यास : शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी ।

कहानी : विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप आदि ।

काव्यगत विशेषताएँ

प्रायः प्रगतिवाद के आरम्भ के समय ही हिन्दी कवियों का एक द. उठ खड़ा हुआ, जो आगे चलकर प्रयोगवादी कहलाया । 'अज्ञेय' जी इसके नेता माने गये । इस प्रयोगवाद की चर्चा 'तारसप्तक' के प्रकाशन के बाद हिन्दी-जगत् में बहुत तीव्रता से चल पड़ी । नयी सामाजिक स्थितियों और वैज्ञानिक प्रगति के फलस्वरूप उगती हुई नयी संवेदनाओं के उद्घाटन का प्रयास, खण्ड जीवन के महत्त्व का प्रतिपादन, व्यक्ति जीवन की लाचारी के साथ भाषा और छन्दसम्बन्धी चमत्कारपूर्ण नये प्रयोग 'अज्ञेय' जी के काव्य की विशेषताएँ हैं ।

भाषा-शैली

अज्ञेय जी की भाषा खड़ीबोली है । आपकी भाषा में सरलता है । शब्द-चयन नवीन तथा भावों को गूँथने में उपयुक्त है । कहीं-कहीं पर तत्सम शब्दों का भी प्रयोग दिखाई पड़ता है । आपने शब्दों के नवीन प्रयोग भी किए हैं ।

अज्ञेय जी की काव्य शैली सुन्दर है । क्रान्तिकारी होने के नाते काव्य में क्रान्ति की अग्नि भड़कती दिखाई पड़ती है । आपकी कविताओं में नवीन संवेदना का समावेश है ।

उषःकाल की भव्य शान्ति

निविडाऽन्धकार
को मूर्त्त रूप दे देने वाली
एक अकिंचन निष्प्रभ अनाहूत
अज्ञात द्युतिकिरण—
 आसन्न-पतन, बिन जमी ओस की अन्तिम
 ईषत्करुण, स्निग्ध कातर शीतलता
 अस्पष्ट किन्तु अनुभूत—
दूर किसी मीनार-क्रीड़ा से मुल्ला का
एकरूप पर अनेक भावोद्दीपक
गम्भीर आऽह्वाऽन—
'अस्सला तु मिननौम'—
 निकट गली में
 किसी निष्करुण जन से बिन-कारण पदाक्रान्त
 पिल्ले की करुण रिरियाहट—
पार गली के छप्पर-तल में
शिशु का तुनक-तुनक कर रोना, मातृ-वक्ष को आतुर;
 ऊपर
 व्याप्त ओर-छोर-मुक्त नीलाकाश—
 दो अनथक, अपलक-द्युति ग्रह
 रात-रात में नभ का आधा व्यास पार कर
 फिर भी नियति-बद्ध अग्रसर ।

उष:काल :
अनायास उठ गया चेतना से निद्रा का आँचल—
मिला न पर पार्थक्य, पड़ा मैं स्तब्ध अचंचल;
मैं ही हूँ वह पदाक्रान्त रिरियाता कुत्ता--
मैं ही वह मीनार-शिखर का प्रार्थी मुल्ला—
मैं वह छप्पर-तल का अहंलीन शिशु-भिक्षुक—
और हाँ, निश्चय,
मैं वह तारक-युग्म,
अपलक-द्युति, अनथक-गति, वद्ध-नियति
जो पार किये जा रहा नील मरु-प्रांगण नभ का ।
मैं हूँ ये सव, ये सव मुझ में जीवित—
मेरे कारण अवगत—मेरे चेतन में अस्तित्व-प्राप्त !
उष:काल
उष:काल की रहस्यमय
भव्य शान्ति !

———

१२ | हरिवंशराय 'बच्चन'

जीवन-परिचय

'बच्चन' लोकप्रियता की दृष्टि से जनप्रिय कवि रहे हैं। हिन्दी शायद ही ऐसा कवि-सम्मेलन रहा हो, जिसमें बच्चनजी को आमंत्रित किया गया हो। हिन्दी का शायद ही कोई काव्य-संग्रह हो जिसकी बिक्री 'मधुशाला' से अधिक हुई हो। इस जनसाधारण कवि का जन्म प्रयाग में संवत् १९६४ को हुआ। इनकी शिक्षा म्यूनिसिपल स्कूल, कायस्थ पाठशाला, गवर्नमेण्ट कालेज, प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। संवत् १९८६ में असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर आपने कालेज छोड़ दिया तथा 'चाँद', 'भविष्य' और 'अभ्युदय' आदि पत्रों में कार्य किया। इन्हीं दिनों इनकी पत्नी श्रीमती श्यामाजी का स्वर्गवास हो गया। इस आघात ने कवि के जीवन को झकझोर दिया। संवत् १९९५ में पुनः विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर अंग्रेजी साहित्य में एम० ए० किया और वहीं अंग्रेजी विभाग में अध्यापक नियुक्त हो गये। आपने सुश्री तेजी सूरी से विवाह कर 'नीड़ का निर्माण' किया। कुछ दिन 'आकाशवाणी' में कार्य किया और संवत् २०१२ में इनकी नियुक्ति भारत सरकार के विदेश-मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में हो गयी। आप राज्य-सभा के मनोनीत सदस्य हैं। आपको इसी वर्ष 'चौंसठ रूसी कविताएँ' पर 'सोवियत-भूमि' का 'नेहरू पुरस्कार' तथा संवत् २०२६ में 'दो चट्टानें' पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुए।

रचनाएँ

खैयाम की मधुशाला (अनुवाद), मधुशाला, मधुकलश, निशा-निमंत्रण, एकान्त-संगीत मिलनयामिनी, प्रणय-पत्रिका, आरती और अँगारे, बुद्ध और नाचघर, दो चट्टानें तथा कटती प्रतिभाओं की आवाज प्रमुख रचनाएँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

बच्चन जी के काव्य में सामाजिक परिस्थितियों की कठोरता पर तीखा व्यंग्य है। इनके काव्य में निर्भीकता और साफगोई दिखाई पड़ती है। इनकी कुछ कविताओं में वेदना कवि भावनाओं के आशा-निराशा के ज्वार में चढ़ती-उतरती है। इस दु:ख में जो आत्म-विस्तार है वह देखते ही बनता है।

भाषा-शैली

आपकी भाषा सरल खड़ीबोली है। प्रायः हिन्दी के तद्भव शब्दों का प्रयोग आपने किया है। विषय के अनुसार शब्दचयन में आप बहुत पटु हैं। यत्र-तत्र हिन्दी के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग मिलता है।

बच्चन जी की काव्य-शैली अत्यन्त सरल तथा प्रभावपूर्ण है। कवि अपने काव्य में अत्यन्त जागरूक और क्रियाशील है।

निर्माण

नीड़ का निर्माग फिर - फिर
नेह का आह्वान फिर- फिर !

(१)

वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि धूसर वादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,

रात-सा दिन हो गया, फिर
रात आई और काली,

लग रहा था अव न होगा
इस निशा का फिर सबेरा,

रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किन्तु प्राची से उषा की
मोहिनी मुसकान फिर-फिर !

नीड़ का निर्माण फिर - फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर !

(२)

वह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़-पुखड़कर
गिर पड़े, टूटे विटप वर

हाय, तिनकों के विनिर्मित
घोंसलों पर क्या न बीती,
डगमगाए जबकि कंकड़,
ईंट, पत्थर के महल-घर;

बोल आशा के विहंगम,
किस जगह पर तू छिपा था,
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज तान फिर-फिर !

नीड़ का निर्माण फिर - फिर,
नेह का आह्वान फिर - फिर !

(३)

क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
में उषा है मुसकराती
घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पंक्ति गाती;

एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है
वह सहज में ही पवन,
उंचास को नीचा दिखाती !
नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नवगान फिर-फिर !
नीड़ का निर्माण फिर-फिर !
नेह का आह्वान फिर-फिर !

———

१३ | गोपालदास 'नीरज'

जीवन-परिचय

हिन्दी कविता को जनप्रिय बनाने में 'बच्चन' जी के बाद यदि किसी को स्मरण किया जा सकता है तो 'नीरज' ही हैं। नीरज जी हिन्दी के आधुनिक गीतकारों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। इनका जन्म पुरावली, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) संवत् १९८३ में हुआ था। आप जब छः वर्ष के थे तभी आपके पिता जी का स्वर्गवास हो गया और इनका पालन-पोषण इनके फूफा ने किया। हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के उपरान्त नौकरी करने लगे और अपने अध्यवसाय से एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ वर्ष विद्यालयों में कार्य करके धर्मसमाज कालेज, अलीगढ़ में हिन्दी प्रवक्ता पद पर नियुक्त हो गये। मेरठ कालेज में भी आपने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। सम्प्रति आप अलीगढ़ के एक कालेज में प्रवक्ता हैं। आजकल फिल्मों के लिए भी लिखने लगे हैं।

प्रमुख रचनाएँ

प्राण-गीत, बादर बरस गयो, दर्द दिया है, नीरज की पाती, दो गीत, मुक्तावली, संघर्ष, विभावरी, फिर दीप जलेगा आदि।

काव्यगत विशेषताएँ

नीरज जी के काव्य में प्रेम, प्रगति और भक्ति ये तीन प्रमुख धाराएँ मिलती हैं। इनके काव्य के इन गीतों में अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति हुई है। इनके काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह संगीतात्मक, सौंदर्य-मय तथा शृंगारिक है।

भाषा-शैली

आपकी भाषा जीती-जागती खड़ीबोली है। भाषा में रस है तथा पद-विन्यास अत्यन्त सरल है। हिन्दी का तद्भव रूप सब जगह दिखाई पड़ता है।

कवि मानबतावादी है और किसी वाद, मत या सम्प्रदाय से परे एक मस्ती का गायक है। नेहरू तथा अरविन्द के दर्शन का कवि पर गहरा प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

साँसों के मुसाफिर

इसको भी अपनाता चल,
उसको भी अपनाता चल,

राही हैं सब एक डगर के, सब पर प्यार लुटाता चल।

बिना प्यार के चले न कोई, आँधी हो या पानी हो,
नई उमर की चुनरी हो या कमरी फटी पुरानी हो,
तपे प्रेम के लिए धरित्री, जले प्रेम के लिए दिया,
कौन हृदय है नहीं प्यार की जिसने की दरबानी हो,

तट-तट रास रचाता चल,
पनघट - पनघट गाता चल,

प्यासी है हर गागर दृग का गंगाजल छलकाता चल।
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल॥

कोई नहीं पराया, सारी धरती एक बसेरा है,
इसका खेमा पश्चिम में तो उसका पूरब डेरा है,
श्वेत बरन या श्याम बरन हो सुन्दर या कि असुन्दर हो,
सभी मछरियाँ एक ताल की क्या मेरा क्या तेरा है?

गलियाँ गाँव गुँजाता चल,
पथ-पथ फूल बिछाता चल,

हर दरवाजा रामदुआरा सबको शीश झुकाता चल ।
राही हैं सब एक डगर के सब पर प्यार लुटाता चल ।।

हृदय हृदय के बीच खाइयाँ, लहू बिछा मैदानों में
घूम रहे हैं युद्ध सड़क पर, शान्ति छिपी शमशानों में,
जंजीरें कट गईं, मगर आजाद नहीं इन्सान अभी
दुनिया भर की खुशी कैद है चाँदी जड़े मकानों में,

सोई किरन जगाता चल,
रूठी सुबह मनाता चल,

प्यार नकाबों में न बन्द हो हर घूँघट खिसकाता चल ।
राही हैं सब एक डगर के, सब पर प्यार लुटाता चल ।।

१४ | भवानीप्रसाद मिश्र

जीवन-परिचय

श्री भवानीप्रसाद मिश्र का जन्म संवत् १९७० में हुआ था। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की। आपको हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, संस्कृत, उर्दू तथा फारसी का अच्छा ज्ञान है। आप सच्चे राष्ट्रप्रेमी हैं। असहयोग आन्दोलन में आपने तीन साल जेल की यातनाएँ सहीं। आप महात्मा गाँधी के भक्त तथा सहयोगी थे। आपने लगभग चार साल वार्धा आश्रम में रह कर गाँधी जी को उनके कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया।

आजकल आप गाँधी वाङ्मय (हिन्दी) के सम्पादक के पद पर सुशोभित हैं।

रचनाएँ

श्री भवानीप्रसाद मिश्र ने अनेक कविताएँ लिखी हैं। इनकी कविताओं का संकलन 'गीत-फ़रोश' नामक ग्रन्थ द्वारा प्रकाशित हुआ है।

काव्यगत विशेषताएँ

मिश्र जी की कविताओं में भारत की वर्तमान दिशा विद्यमान है। इनके गीत सरल एवं अभिव्यक्तिपूर्ण हैं। आपके काव्य की विशेषता है कि इसमें हास्य की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है।

भाषा-शैली

आपने अपने काव्य की भाषा सरल खड़ीबोली अपनाई है ताकि आपकी आवाज़ सब तक पहुँच सके। उर्दू के शब्दों का सफल प्रयोग किया है। यत्र-तत्र अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग मिलता है। आपकी शैली अत्यन्त रोचक तथा व्यंग्य-युक्त है।

गीत-फ़रोश

जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के
गीत बेचता हूँ,
मैं क़िसिम-क़िसिम के गीत
बेचता हूँ !

जी, माल देखिए, दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,
यह गीत सख्त सर-दर्द भुलाएगा,
यह गीत पिया को पास बुलाएगा !

जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको;
पर बाद-बाद में अक़्ल जगी मुझको,
जी, लोगों ने तो बेच दिये ईमान,
जी, आप न हों सुन कर ज़्यादा हैरान--
मैं सोच समझ कर आख़िर
अपने गीत बेचता हूँ,
जी हाँ, हुज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं क़िसिम-क़िसिम के गीत बेचता हूँ

यह गीत सुबह का है, गा कर देखें,
यह गीत ग़ज़ब का है, ढा कर देखें,
यह गीत ज़रा सूने में लिक्खा था,
यह गीत वहाँ पूने में लिक्खा था,
यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है,
यह गीत बढ़ाए से बढ़ जाता है !
यह गीत भूख और प्यास भगाता है,
जी, यह मसान में भूख जगाता है,
यह गीत भुवाली की है हवा हुज़ूर,
यह गीत तपेदिक़ की है दवा हुज़ूर,
जी, और गीत भी हैं दिखलाता हूँ,
जी, सुनना चाहें आप तो गाता हूँ।
जी, छंद और बेछंद पसंद करें,
जी अमर गीत और वे जो तुरत मरें !
ना, बुरा मानने की इसमें बात.
मैं ले आता हूँ, क़लम और दावात,
इनमें से भाये नहीं, नये लिख दूँ,
जी, नये चाहिए नहीं, गये लिख दूँ !
मैं नये, पुराने सभी तरह के
गीत बेचता हूँ,
जी हाँ, हुज़ूर मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ !
मैं क़िसिम-क़िसिम के गीत बेचता हूँ !

हिन्दू-मुसलमान

मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

मैं तुम्हें समझता रहा म्लेच्छ, तुम मुझे काफ़िर या दहक़ानी !
सदियों हम दोनों साथ रहे, यह बात न अब तक पहचानी——
दोनों ही धरती के जाये, हम अनचाहे महमान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

हैं अलग-अलग हम दोनों के व्यवहार-मान जीवन-दर्शन;
सांस्कृतिक स्रोत दोनों के दो, करते दो भावों का सिंचन;
पर दो होकर भी मिल न सके तो दोनों का कल्याण नहीं !
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

तुममें देशान्तर की समष्टि, मैं कालान्तर का दृष्टिदीप !
जीवन-सागर के दो मोती, हैं देशकालगत युगल सीप !
मोती को हम मिट्टी समझे, क्या दोनों का अज्ञान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

इस्लामपूर्व की संस्कृतियाँ भाषायें तुमने अपनाईं,
इस्लामपूर्व के शाहों की गाथायें कवियों ने गाईं;
फ़ारस - तुर्की को अपनाया, क्या अपना हिन्दुस्तान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

काफ़िर थे, फिर भी अपनाये इस्लामपूर्व के ईरानी;
ुमने मंगोलों से सीखी रणचतुराई औ ख़ाकानी !
इस्लामपूर्व के हिन्द देश की क्यों तुमको पहचान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

मैं हिन्दू हूँ, बोदा हिन्दू, करता था तुमसे असहयोग,
था छूत भूत से दबा हुआ, घरघुसनेपन का रहा रोग !
मेरी जागृति का अमृत किन्तु होगा तुमको विष-पान नहीं !
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

अब तो सदियों की नींद खुली, इतिहास ज्ञान-विज्ञान मिले !
ुरझाये थे जो प्रेम-फूल कर नव-जीवन-रसपान खिले !
ुल-कमल खिलेंगे साथ-साथ यह हिन्द अभी वीरान नहीं !
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

मैं देशान्तर-व्यापी मुसलिम इतिहास करूँगा हृदयंगम,
हले भी तो यवनों के सँग था हुआ हिन्दियों का संगम !
या हम दोनों, दोनों का ही कर सकते हैं सम्मान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

ुमको प्यारी है ख़ुद्दारी, मुझको विनम्रता आभूषण !
ुम आसमान के अभिलाषी, मुझको प्रिय हैं धरती के कण !
र क्या भू में मिलती न देह ? नभ में खो जाते प्राण नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

जन-क्रान्ति जगाने आई है, उठ, हिन्दू ! उठ, ओ मुसलमान !
संकीर्ण भेद-संदेह त्याग, उठ महादेश के महाप्राण !
क्या पूरा हिन्दुस्तान न यह ? क्या पूरा पाकिस्तान नहीं ?
मैं हिन्दू हूँ, तुम मुसलमान; पर क्या दोनों इन्सान नहीं ?

१६ गोपालप्रसाद व्यास

ीवन-परिचय

श्री गोपालप्रसाद व्यास का जन्म, माघ शुक्ला दशमी संवत् १९७२ मथुरा जिले के पारासौली (मोहम्मदपुर) ग्राम में हुआ । प्रारम्भ से ही सकी रुचि व्रजभाषा और साहित्य के प्रति रही । पिंगल, अलंकार तथा आदि का अध्ययन किया । स्कूली शिक्षा केवल सातवीं श्रेणी तक ही प्राप्त सकी परन्तु बाद में विशारद, प्रभाकर और साहित्यरत्न की परीक्षाएँ ीर्ण कीं ।

व्यास जी आगरा नागरी प्रचारिणी-सभा में शोधकर्त्ता रह चुके हैं । 'साहित्य संदेश' के सम्पादक पद से विभूषित हो चुके हैं । आजकल दिल्ली से निकलने वाले दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सह सम्पादक आपने प्रारम्भ में व्रजभाषा की कविताएँ लिखीं । पर सं० १९९७ वि० से -विनोद की ओर रुझान हुआ ।

नाएँ

'बाबू जी की डबल भैंस', 'अजी सुनो' तथा 'चले आ रहे हैं' हास्य-रस की ाएँ हैं । 'मैंने कहा कुछ सच, कुछ झूठ' व्यंग्य-विनोद-पूर्ण निबन्ध है । —'अरबों के देश में', 'कदम-कदम बढ़ाये जा', 'हमारे राष्ट्रपिता' आदि ।

यगत विशेषताएँ

आप एक हास्य रस-प्रधान कवि हैं । व्यंग्य रहते हुये भी आपकी कविताएँ मार्मिक हैं । आपने वर्तमान मनुष्य के हृदय को अच्छी तरह पहचाना र उसे अपने काव्य में व्यक्त किया है ।

भाषा-शैली

आपकी भाषा सरल खड़ीबोली है। प्रत्येक शब्द में व्यंग्य तथा हास्य भरापुरा है। इस क्षेत्र में आपका शब्दचयन सराहनीय है। आपकी शैली विशेषतः व्यंग्यात्मक है।

सुकुमार गधे

मरे प्यार सुकुमार गध !
जग पड़ा दुपहरी में सुनकर
मैं तेरी मधुर पुकार गधे !
मेरे प्यारे ! सुकुमार गधे !
तन-मन गूँजा, गूँजा मकान,
कमरे की गूँजीं दीवारें,
लो, ताम्र-लहरियाँ उठीं मेज पर
रखे चाय के प्याले में !
कितनी मीठी, कितनी मादक,
स्वर, ताल, तान पर सधी हुई
आती है ध्वनि, जब गाते हो,
मुख ऊँचा कर, आहें भरकर
तो हिल जाते छायावादी-
कवि की वीणा के तार, गधे !
मेरे प्यारे......!

तुम दूध, चाँदनी, सुधास्नात,
बलकुल कपास के गोले-से,
हैं बाल बड़े स्पर्श-सुखद-
आँखों की उपमा किससे दूँ ?

वे कजरारे, आयत लोचन,
दिल में गढ़-गढ़कर रह जात,
कुछ रस की, बेबस की वातें
जाने-अनजाने कह जाते ।
वे पानीदार, कमानी-से
हैं 'श्वेत-श्याम-रतनार' ·गधे !
मेरे प्यारे······ !

हैं कान कमल-सम्पुट से थिर,
नीलम से विजड़ित चारों खुर,
मुख कुन्द-इन्दु-सा विमल,
कि नथुने भँवर-सदृश गम्भीर, तरल,
तुम दूध नहाए-से सुन्दर,
प्रति अंग-अंग से तारकदल-
ही झाँक रहे हों निकल-निकल !
हे फेनोज्वल, हे श्वेत कमल,
हे शुभ्र अमल, हिम-से उज्ज्वल,
तेरी अनुपम सुन्दरता का
मैं सहस कलम लेकर के भी
गुण-गान नहीं कर सकता हूँ,
फिर तेरे रूप-सरोवर की
मैं कैसे पाऊँ पार गधे !
मेरे प्यारे······ !

तुम अपने रूप-शील, गुण से
अनजान बने रहते हो क्यों ?
हे लात फेंकने में सकुशल !
पगहा बन्धन सहते हो क्यों ?
ए साधु, स्वयं को पहचानो,
युग जाग गया, तुम भी जागो।

मन की कायरता को त्यागो,
रे जागो, रे, जागो, जागो !
इस भारत के धोबी-कुम्हार-
भी शासक पूँजीवादी हैं।
तुम क्रान्ति करो, लादी पटको,
बर्तन फोड़ो, घर से भागो !
हे प्रगतिशील युग के प्राणी,
तुम रचो नया संसार, गधे !
मेरे प्यारे……!

———

१७ | शिवमंगलसिंह 'सुमन'

जीवन-परिचय

कविवर डा० शिवमंगलसिंह 'सुमन' का जन्म झगरपुर जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) में संवत् १९७३ में हुआ था। बनारस हिन्दू विश्वविद्याल से एम० ए० कर, वहीं से डी० लिट्० की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्ष त आप उज्जैन कालेज में प्रोफेसर रहे, तदुपरान्त नेपाल में स्थित भारती दूतावास में विशेषाधिकारी रहे। वहाँ से लौटकर पुनः उज्जैन में प्राध्याप हो गये। इसके उपरान्त कई वर्ष तक माधव कालेज, उज्जैन के प्राचार्य रहे सम्प्रति आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी की मृत्यु के बाद आपकी नियुक्ति विक्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति के रूप में हुई।

रचनाएँ

हिल्लोल, जीवन के गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आं नहीं भरीं आदि।

काव्यगत विशेषताएँ

'सुमन' जी आधुनिक युग के सुकुमार कवि हैं। आपकी काव्य-प्रतिभ कैशोर्य काल में ही दिखाई पड़ने लगी थी। प्रारम्भिक रचनाएँ सौन्दर्य औ रोमानीपन में डूबी हुई दीखती हैं, किन्तु विचारों की प्रौढ़ता के साथ ह साथ कवि प्रगतिशील विचारधारा का पक्षपाती हो गया। यों तो आप बहु ी भावुक हैं, किन्तु आपका बौद्धिक रुझान आपको पिछड़े वर्ग की दयनीय दश की ओर खींच ले जाता है। काव्य में जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टिको आपकी रचनाओं में मिलता है।

भाषा-शैली

सुमन जी की भाषा सरल खड़ीबोली है । आपकी भाषा में सुवोधता एवं प्रवाह है ।

आप गीतकार हैं। इन गीतों में सुलझे हुए भाव, सहज कल्पना और आन्तरिक उन्मेष के दर्शन होते हैं। कल्पना और भाव-सौन्दर्य शब्दों की सामर्थ्य प्रकट करता है । आपने गीत ही अधिक लिखे हैं जिनकी गेयता तथा सरसता देखते ही बनती है ।

हमें न बाँधो प्राचीरों में

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे
कनक - तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे ।

हम बहता जल पीने वाले
मर जाएँगे भूखे - प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक कटोरी की मैदा से ।

स्वर्ण - शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले ।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण - सी चोंच खोल
चुगते तारक - अनार के दाने ।

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा होड़ी,

या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी ।

नीड़ न दो चाहे, टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिये हैं तो
आकुल उड़ान में बिघ्न न डालो ।

पागल प्राण बँधेंगे कैसे,
नभ की धुँधली दीवारों में

---

१८ | भारतभूषण अग्रवाल

जीवन-परिचय

श्री भारतभूषण अग्रवाल का जन्म संवत् १९७६ में मथुरा (उत्तरप्रदेश) में हुआ। हाईस्कूल तक की शिक्षा मथुरा में और एम० ए० अँग्रेजी साहि लेकर आगरा विश्वविद्यालय से संवत् २००८ में उत्तीर्ण किया।

अग्रवाल जी अपनी जीवनचर्या के लिए कलकत्ता आदि नगरों में कु दिन कार्य करते रहे। संवत् २००४ से संवत् २०१७ तक आकाशवाणी कार्य किया। इस समय आप साहित्य एकादमी, नई दिल्ली में सहायक मंत्री पद पर कार्य कर रहे हैं।

रचनाएँ

छवि के बन्धन, जागते रहो, मुक्ति मार्ग, किसने फूल खिलाए तथा अप्रस्तुत मन आदि प्रसिद्ध काव्य-रचनाएँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

श्री अग्रवाल जी ने इस संसार को गहराई तक मापा है। आपने अप अनुभव द्वारा यह सिद्ध किया है कि यह संसार मिथ्या है। कर्म से पलाय ही आपकी कविताओं का स्पन्दन रहा है।

आपकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना विद्यमान है। इसके अतिरि आपने कुछ कविताएँ हास्य रस की भी लिखी हैं। इन कविताओं में हास्य व्यंग्य के माध्यम से आज के समाज की अनेक समस्याएँ प्रस्तुत की हैं।

भाषा-शैली

आपकी भाषा सरल और प्रवाहयुक्त है। शब्दों का चयन अत्यन्त सुन्दर है। कहीं-कहीं पर अँग्रेजी भाषा के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है।

आपकी शैली बड़ी ही मार्मिक तथा ओजपूर्ण है।

ब्रह्मपुत्र का कूल न देंगे

जव तक अन्तिम बूंद रक्त की, जव तक अन्तिम शस्त्र हाथ म--
मिट जायेंगे, लेकिन माँ के सिर का शुभ्र दुकूल न देंगे।

हम मिट-मिट कर बनने वाले,
मर कर पुनः जनमने वाले।
वरस अठारह छतरी जीवे
गाते हम जगनिक मतवाले।

जव तक साबित अन्तिम चूड़ी, जब तक अन्तिम माँग सिन्दूरी—
तिज - तिल कट जायेंगे, लेकिन ब्रह्मपुत्र के कूल न देंगे।

मत सोचो संख्या में कम हैं,
पुरखों के सदेह विक्रम हैं।
सवा लाख से एक लड़ाये
उन सिंहों के वंसज हम हैं।

जव तक माँ की अन्तिम लोरी, अन्तिम माखन भरी कटोरी--
देश-प्रदेश प्रलाप, पिनक का सूखा एक बबूल न देंगे।

याद हमें केसरिया बाना,
मृत्यु हमें भाँवर डलवाना।
माँ की कोख सिखा देती है
चक्रव्यूह भेदन कर जाना।

जब तक अन्तिम माथे टीका, अन्तिम कर धागा राखी का--
हिमगिरि तो क्या अपनी धरती की चुटकी भर धूल न देंगे ।

जहाँ गर्व के गर्व झड़ें हैं,
उस धरती पर हुए बड़े हैं ।
साक्षी है इतिहास युद्ध में
कितनी बार कबन्ध लड़े हैं ।

जब तक अन्तिम लक्ष्मी घर में, अन्तिम प्राणाहुति खप्पर में--
गिरिवन को क्या ताक रहे हो, मुरझाया भी फूल न देंगे ।

काव्य-मंजूषा

परिशिष्ट

शब्दार्थ
अभ्यास के लिए प्रश्न

ब्रलिह
भजन
फूल
रवा

स्याम
भौंरा

ल्ल
ातव
तो=
याट

ति=

शब्दार्थ

कबीरदास

पतंग=पतिंगा । भ्रमि=घूमना, चक्कर लगाना । उबरंत=पार होना । बलिहारी=न्योछावर । पाहन=पत्थर । मनुवाँ=मन । सुमिरन=स्मरण, भजन । चकमक=पत्थर विशेष जिसको रगड़ कर आग निकालते हैं । पुहुप=फूल । बास=गन्ध । कूप=कुआँ । पारब्रह्म=ईश्वर । उनमान=नाप-तौल । रवान=साक्षी ।

सूरदास

खिझायो=चिढ़ाना । जायो=जन्म दिया । रिस=क्रोध । तातु=पिता । स्याम=काला । धूत=चालाक । पावक=अग्नि । दह्यौ=जलाना । अलि-सुत=भौंरा । जलसुत=कमल । सारंग=हिरन । माधव=कृष्ण भगवान् ।

तुलसीदास

बर=उत्तम, अच्छे । कुन्दकली=कमल की कली । अधराधर=दोनों होठ । पल्लव=पत्ते । चपला=बिजली । लटैं=केश । लोल=सुन्दर । कपोलन=गाल । पातकी=पापी । पाप-पुंज-हारी=पापों को नष्ट करने वाला । मो=मेरे । सो=समान । हौं=मैं । ठाकुर=भगवान । चेरो=नौकर । हितु=मित्र । कृपालु=दयालु । सरन=शरण ।

बिहारीलाल

भव=संसार । नागरि=चतुर । छाइं=परछाई । हरित=हरा, प्रसन्न । द्युति=चमक । कटि=कमर । काछनी=धोती । बानिक=भेष । पीत=पीला ।

पट=कपड़ा । **सलोने**=सुन्दर । **गति**=शरीर । **नीलमनि-सेल**=नीलम का पहाड़ । **आतप**=गर्मी, सूर्य का तेज । **अपत**=विना पत्ते की । **भुज**=हाथ । **भूषन**=जेवर । **दीप-शिखा**=दीये की ज्योति । **दोहरे**=दोहे । **नावक**=वाण विशेष । **छीन**=महीन । **सुरसरिता**=गंगा जी । **जुगमीन**=दो मछलियाँ ।

भूषण

नियरे=नजदीक । **गैरमिसिल**=अनुचित । **गुसीला**=गुस्से से भरे हुये । **सियरे**=शान्त । **भनत**=गरजना । **बलकन**=क्रोधित । **उड़ाय गये**=काँपने लगे । **जियरे**=हृदय । **तमक**=क्रोध । **तें**=से । **निरखि**=देखकर । **नौरंग**=औरंगजेब (एक मुगल सम्राट, शाहजहाँ का पुत्र)। **पियरे**=पीला । **जंभ**=एक राक्षस विशेष यह जंभासुर के नाम से प्रसिद्ध है। यह वलि का मित्र था । इसे इन्द्र ने मारा था । **बाड़व**=समुद्र की आग (बड़वानल) । **सुअंभ**=समुद्र । **सदंभ**=घमंडी । **रघुकुलराज**=रघु राजा के कुल के नायक अर्थात् रामचन्द्रजी । **बारि वाह**=समुद्र **रतिनाह**=कामदेव । **सहस्रबाहु**=हैहयवंशी महा प्रतापी राजा । दत्तात्रेत की उपासना से इन्हें सहस्र वाहु होने का वरदान मिला था । परशुराम ने इन्हें मारा था । **द्विजराज**=परशुराम । **दावा**=जंगल की आग (दावानल) **द्रुमदुण्ड**=पेड़ । **बितुण्ड**=हाथी । **मृगराज**=शेर । **तम-अंश**=अन्धकार **कान्ह**=श्री कृष्ण जी । **मलिच्छ**=मुसलमान ।

रसखान

धेनु=गऊ । **मझारन**=बीच में । **पाहन**=पत्थर । **पुरन्दर**=वैवस्वत मन्वंत के इन्द्र । इन्होंने वास्तु शास्त्र पर एक ग्रन्थ लिखा था । आकाश तथा बाद के प्रतीक-स्वरूप देवता । **खग**=पक्षी । **कालिंदी**=यमुना नदी । **कूल**=किनारे **कदंब**=एक पेड़ विशेष । **सेस**=शुद्ध रूप शेष अर्थात् शेशनाग । इन पर पृ टिकी हुई है । **दिनेस**=शुद्ध रूप दिनेश अर्थात् सूर्य भगवान । **सुरेसहु**=रा

इन्द्र, देवताओं के नायक । कृष्ण से रुष्ट होकर इन्होंने ब्रज पर वृष्ट करा दी । तब कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण कर ब्रजी की रक्षा की । **सुक**=शुद्ध रूप शुक । इन्हें शुकदेव भी कहते हैं । आपने अपने पिता महर्षि व्यास तथा राजा जनक से मोक्ष धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी । **पचि**=अन्त में । **तऊ**=फिर भी । **पुनि**=फिर । **छोहरियाँ**=लड़कियाँ । **छछिया**=दही या मट्ठा रखने का बरतन । **छाछ**=मट्ठा ।

प्रश

रच

प्रश्न

श्न

अभ्यास

कबीर के दोहे

प्रश्न :

(१) गुरु के बारे में कबीर ने कौन-सी बातें बतायी हैं ?
(२) कबीर के अनुसार ईश्वर का निवास कहाँ है ?
(३) परमात्मा की अपेक्षा गुरु को क्यों महत्त्व दिया गया है ?
(४) मनुष्य को किस प्रकार भगवान का भजन करना चाहिये ?

रचना :

विचार-विस्तार कीजिए :—

अंधै अंधा ठेलिया दून्यू कूप पड़ंत ।

सूरदास के पद

प्रश्न :

(१) श्रीकृष्ण ने यशोदा से क्यों शिकायत की ?
(२) यशोदा ने उसके उत्तर में श्रीकृष्ण से क्या कहा ?
(३) सूरदास ने 'प्रीति' के बारे में क्या कहा है ?

तुलसी वचनामृत

श्न :

(१) तुलसीदास ने भगवान् राम के कौन से रूप का वर्णन किया है ?
(२) तुलसीदास ने रामचन्द्र के दाँतों की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?

(३) तुलसीदास भगवान् राम पर अपने प्राण न्योछावर करने को क्यों तैयार हैं ?

(४) तुलसीदास ने भगवान् राम की प्रशंसा किस प्रकार की है ?

(५) अपने शब्दों में सरलार्थ लिखिए :—

तोहिं मोहि नाते अनेक, मानियै जौ भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु ! चरन-सरन पावै ॥

बिहारी के दोहे

प्रश्न :

(१) विहारी के मन में श्रीकृष्ण का कौन-सा रूप बसा है ?

(२) कृष्ण का पत्र देखकर गोपियों ने क्या किया ?

(३) शोभा के भार से गोपी के पैर पृथ्वी पर सीधे क्यों नहीं पड़ते हैं ?

(४) सतसई के दोहे छोटे होने पर भी गंभीर घाव क्यों करते हैं ?

(५) विहारी ने चंचल नयन की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

शिवा-शौर्य

प्रश्न :

(१) शिवाजी ने औरंगजेब का क्यों अपमान किया ?

(२) औरंगजेब का मुख काला तथा सिपाहियों का मुख पीला क्यों पड़ गया ?

(३) शिवाजी की प्रशंसा में भूषण ने क्या कहा है ?

कृष्ण-महिमा

प्रश्न :

(१) रसखान मरने के बाद भी गोकुल गांव में किस-किस प्रकार से बसना चाहते हैं ?

(२) श्रीकृष्ण की महिमा किसने-किसने गाई है ?

(३) बड़े-बड़े देवताओं ने भगवान् कृष्ण की क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

(४) अहीर की लड़कियाँ कृष्ण को थोड़े से मट्ठे के लिये क्या करती थीं ?

कल्पना-विस्तार कीजिए :—

पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।

कंस का स्वाभिमान

श्न :

(१) कंस ने अपने स्वाभिमान में क्या कहा है ?

(२) कंस ने धर्म के विषय में क्या कहा है ?

(३) कंस किस प्रकार से आगे बढ़ना चाहता है ?

(४) जो दो बूंद नेत्र-जल देख कर गल जाते हैं उन्हें कवि ने क्या बताया है ?

(५) कवि ने ब्रह्मवादी को कायर क्यों कहा है ?

सोनजुही

श्न :

(१) सोनजुही की बेल आँगन की दीवार पर किस प्रकार चढ़ती है ?

(२) सोनजुही की सुन्दरता का वर्णन अपने शब्दों में करिए ।

(३) 'सोनजुही की बेल हठीली लटकी सधी अधर पर' इसका आशय समझाइए ।

(४) कवि ने सोनजुही की बेल को चंचल हिरनी क्यों कहा है ?

जो तुम आ जाते एक बार

न :

(१) कवयित्री किसको बुला रही है ?

(२) कवयित्री अपने प्रीतम का किस प्रकार स्वागत करेगी ?

(३) प्रीतम के आ जाने पर कवयित्री में क्या परिवर्तन हो जावेगा ?

अभिनव मनुष्य

प्रश्न :

(१) वर्तमान युग के मनुष्य ने क्या चमत्कार कर दिखाया ?
(२) कवि मनुष्य को क्या करने को कहता है ?
(३) विज्ञान के चमत्कार का वर्णन करिये ।
(४) आज के मनुष्य की क्या विशेषता है ?
(५) मनुष्य का श्रेय कब होगा ?

उषःकाल की भव्य शांति

प्रश्न :

(१) सूर्य की पहली किरण के बारे में कवि ने क्या कहा है ?
(२) उषःकाल होते ही मुल्ला क्या करता है ?
(३) मुल्ला नमाज को नींद से अच्छा क्यों बताता है ?

निर्माण

प्रश्न :

(१) आकाश में अँधेरा क्यों छा गया ?
(२) रात हो जाने पर कैसा लग रहा था ?
(३) हवा के झोंके चलने से क्या हुआ ?
(४) कवि ने आशा को किससे सम्बोधित किया है ?

साँसों के मुसाफिर

प्रश्न :

(१) कवि सबको अपनाने को क्यों कहता है ?
(२) प्यार के सम्बन्ध में कवि ने क्या कहा है ?

(३) हृदय-हृदय के बीच खाईं बनाने का क्या फल है ?
(४) 'सोई किरन जगाता चल
रूठी सुबह मनाता चल।"—कवि ने ऐसा क्यों कहा ?
(५) इस कविता से क्या शिक्षा मिलती है ?

गीत फरोश

प्रश्न :

(१) गीत बेचने से कवि का क्या मतलब है ?
(२) कवि कौन-कौन से गीत बेचता है ?
(३) रेशमी और खादी के गीतों से कवि का क्या तात्पर्य है ?
(४) कवि ने गीत बेचने को पाप क्यों कहा है ?
(५) कवि गीत क्यों बेचता है ?

हिन्दू-मुसलमान

प्रश्न :

(१) हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे को क्या समझते रहे ?
(२) हिन्दू-मुसलमान का कल्याण किस प्रकार होगा ?
(३) मुसलमान ने अपनी संस्कृति कहाँ से ली ?
(४) मुसलमान ने रणचतुराई कहाँ से सीखी ?
(५) कवि ने हिन्दू की क्या विशेषता बतायी है ?
(६) कवि हिन्दू-मुसलमान से क्या करने को कहता है ?

सुकुमार गधे

प्रश्न :

(१) कवि दुपहरी में क्यों जग पड़ा ?
(२) गदहे की आवाज से क्या हुआ ?

(३) गदहे की सुन्दरता का वर्णन अपने शब्दों में करिये ।
(४) 'वे पानीदार कमानी से' कवि का क्या मतलब है ?
(५) कवि अपनी कविता द्वारा धोबी-कुम्हार को किस बात का संदेश देता है ?

हमें न बाँधो प्राचीरों में

प्रश्न :

(१) पिंजरे में बन्द पंछी क्यों नहीं उड़ पाएगा ?
(२) पंछी अपनी उड़ान क्यां भूल गया ?
(३) पंछी के पंखों की होड़ा-होड़ी से क्या हुआ ?
(४) पंछी किस वात की माँग करता है ?

ब्रह्मपुत्र का कूल न देंगे

प्रश्न :

(१) कवि ने भारतीयों की क्या विशेषता बतायी है ?
(२) 'जब तक साबित अंतिम चूड़ी
तब तक अन्तिम माँग सिंदूरी'—से कवि का क्या तात्पर्य है ?
(३) कवि चीनियों को किस बात की चेतावनी देता है ?

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya ★ Bharatiya Vidya
M25